

कुछ बात है कि हरती मिटवी नहीं हमारी

वक्त बदलता है और उसके अनुरूप प्रासांगिकताएँ भी बदलती जाती हैं। बस कुछ चीजें ही अपवादरूप वक्त की कसीटी पर खरी उतर पाती हैं। हमारा आईआईटी खड़गपुर उन्हीं कुछ अपवादों में से एक है जिसको किसी भी स्तर पर परिचय की आवश्यकता नहीं



है। देश की सबसे पूरानी और बड़ी आईआईटी ने जितना योगदान दाढ़ की औद्योगिक और तकनीकी प्रगति में दिया है उतना शायद ही किसी और संस्थान ने दिया होगा।

आईआईटी प्रणाली के पूरे इतिहास में आईआईटी खड़गपुर अग्रणी गिना जाता रहा है और यहाँ पढ़ना गौरव की बात मानी जाती रही है। पर पिछले कुछ समय से ऐसा महसूस किया जा रहा है कि यहाँ आने वाले लोग उतना गौरवान्वित महसूस नहीं कर रहे जितना उनको करना चाहिए। कई आवश्यक कारण संदेह का वातावरण उत्पन्न कर रहे हैं। पिछले दिनों जैफ़ि के हुए नामांकन के बाद अखबारों में आई चिपोर्टी के अनुसार अब अग्रणी छात्र आईआईटी दिल्ली और आईआईटी मुंबई को ज्यादा पसंद कर रहे हैं और इसके पीछे एक अजीबोगरीब सिद्धांत प्रस्तुत किया गया कि पुराने दिनों में जब आईआईटी खड़गपुर के एल्यूमनाई ऊँचे पर्दों पर पहुँच चुके थे तब आईआईटी दिल्ली और आईआईटी मुंबई फिर भी नए थे। अब स्थिति बदल गई है और इसीलिए लोग दिल्ली और मुंबई का रुख कर रहे हैं। गौर करने की बात यह है कि ट्रैक पिछले दिनों में बदला है और दस साल पहले आईआईटी दिल्ली और आईआईटी मुंबई भी 35-40 साल पुराने हो चुके थे।

दिल्ली, मुंबई और चेन्नई महानगर हैं और निश्चित तौर पर महानगरों के कुछ फायदे रहते हैं। लोग उनकी चकाचौध से आकर्षित भी होते हैं। पर खड़गपुर जैसी छोटी जगह का अपना अलग महत्व है। अगर इस बात पर गौर किया जाए तो हम देखेंगे कि दुनिया के कई प्रसिद्ध और बड़े विश्वविद्यालय ऐसे ही उपनगरों में स्थित हैं। सबसे महत्वपूर्ण पहलू है, शांति और जगह की पर्याप्त उपलब्धता। इनके बिना अध्ययन का उचित माहौल नहीं बन सकता। दूसरी बात है आईआईटी खड़गपुर की जानी पहचानी 'सोशल नेटवर्किंग'। यहाँ पर अलग अलग सम्झताओं से आए हुए लोग एक साथ रहते और काम करते हैं जिसकी छाप यहाँ के हर छात्र पर देखी जा सकती है। ऐसा माहौल, ऐसा 'हॉल कॉचर' और ऐसी विविधता शायद ही किसी और संस्थान में नहीं हो।

आईआईटी खड़गपुर जाहिर तौर पर सबसे बड़ी आईआईटी है और यहाँ विमानों, विद्यालयों और केंद्रों की संख्या सबसे ज्यादा है। इस कारण यहाँ एक 'इंटर डिसिप्लिनरी' नज़रिया विकसित करना और तमाम तरह की चीजें सीखना तुलनात्मक रूप से आसान है। 'रिसर्च'

जो नवांगतुक पाठक
आवाज़ से पहली
बार लूबलू हुए हैं
उनको हमारा
नमस्कार!! आवाज़
की पूरी टीम II A



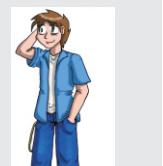
खड़गपुर की कुछ अलग ही दुनिया में आपका खागत करती है। आवाज़ II A खड़गपुर की मासिक पत्रिका है जो कि पिछले कुछ वर्षों से कैम्पस से जुड़ी हर छोटी बड़ी हलचल की खबर छात्रों, शिक्षकों, एल्यूमनाई अर्थात् केजीपी से जुड़े हर शाखा तक पहुँचाती आई है। आईआईटी खड़गपुर एवं देश विदेश के मुद्दों पर हमारे छात्र समूह की निष्पक्ष राय प्रस्तुत करना और साहित्यिक एवं व्यंग्यात्मक लेखों से आपका मनोरंजन करना हमारा मुल उद्देश्य रहा है। छात्रों की समस्याओं को प्रबंधन तक पहुँचाना एवं उनके निर्णयों से छात्रों को अवगत कराना भी हमारी पहल का हिस्सा है। टीम आवाज़ की तरफ से आपको आने वाले जीवन के लिए शुभकामनाएँ और आशा करते हैं कि हमारा साथ अब यूँ ही बना रहेगा।

पृष्ठ 2
B.C.Roy पर विशेष



पृष्ठ 4
IITs - एक समीक्षा

पृष्ठ 5
First year special



पृष्ठ 7
परिवार....
एक नेक शुरुआत

पंजी Dude

लंदन देखा पेसिस देखा सब देखा
मेरी जान, सारे जग में कहीं नहीं
है दूसरा हिन्दुस्तान



ईकिंग में पहले स्थान पर आता है। रिसर्च में भी आईआई एसटी बंगलुरु के बाद आईआईटी खड़गपुर किसी भी दूसरी आईआईटी से ऊपर दूसरे स्थान पर आता है। कुल मिलाकर ये कहा जा सकता है कि हर जगह की अपनी समस्याएँ और खबियाँ होती हैं सो हमारा आईआईटी खड़गपुर भी इससे अछूता नहीं है। परंतु इन बारों से इसके महत्व और उपयोगिता में कोई कमी नहीं आती। यहाँ आना अब भी गौरव की बात है और हमेशा रहेगी।

एक बेटर कल की ओर B.C. Roy टेक्नोलॉजी अस्पताल

B.C. Roy टेक्नोलॉजी आस्पताल बदलाव के दौर से गुजर रहा है। मौजूदा हालत और कैपस की बढ़ती जनसंख्या को महेनजर रखते हुए परिवर्तनों और सुधारों की सख्त जरूरत महसूस की जा रही है। अब प्रशासन B.C. Roy और कैपस में स्वास्थ्य सुविधाओं को ले कर काफी सजग दिखाई दे रहा है। इसी संबंध में आस्पताल के चेयरमैन प्रो. गौतम सिन्हा से हमारी बात हुई। प्रस्तुत है बात-चीत के कुछ अंश :

आगाज टीम : पिछले दिनों B.C. Roy टेक्नोलॉजी हॉस्पिटल में काफी सुधार देखने को मिले हैं। आप कृपया इस पर कुछ प्रकाश डालें।

प्रो. सिन्हा : कई निर्णय लिए गये हैं और उनके अनुरूप काफी काम हुए हैं और कई और योजनाएँ पाइपलाईन में हैं। डा. एस. के. गांगुली, जो कि नेवी की चिकित्सा सेवाओं के निदेशक रह चुके हैं, को चिकित्सा सलाहकार बनाया गया है। पैथोलॉजी प्रयोगशाला के सुधार के लिये कई निर्णय लिए गये हैं। इसके तहत सेमी ऑटो एनालाइजर और सेल काउंटर की खीदारी हो चुकी है जो कुछ दिनों में काम करना शुरू कर देंगे। इसके अलावा एक विजिटिंग पैथोलॉजिस्ट की नियुक्ति की गई है जो सपाव हमें पांच दिन आया करेगा। एक 24x7 दवाखाना पहले ही काम करना शुरू कर चुका है जहाँ मरीजों को सीधे दवा मिल सकेंगी। एक टाटा 709 किटिकल केंयर एंबुलेंस और एक अन्य टाटा टाटा विगर एंबुलेंस की खीदारी हो चुकी है और उनकी बॉडी फिट की जा रही है। विजिटिंग डॉक्टरों की नियुक्ति के लिए नीति बनाई जा रही है और दक्षिण-पूर्व रेलवे अस्पताल से संबंधी को पुनर्जीवित किया जा रहा है। वहाँ के चिकित्सा प्रमुख डा. बी. मिश्र चिकित्सा संबंधी सारी नियुक्तियों से संबद्ध हैं। आपात स्थितियों में रेलवे अस्पताल में भुगतान के आधार पर उपचार पर सहमति बन चुकी है। इसके अलावा मेडिकल हेल्पलाइन स्थापित की गई है जिसका नंबर है 81007/08/09। इसके अलावा 20 जुलाई से 24 घंटे अपात कालिन डॉक्टर की सुविधा भी दी गई है। एक डॉक्टर ज्वाइन कर चुका है और 9 सितंबर तक दो और आने वाले हैं। इसके अलावा चार नर्सों की नियुक्ति की गई है जो आ चुकी हैं। इसके अलावा मेडीकल टेक्नीशियन की नियुक्ति जल्दी ही की जायेगी। एडवांस नर्सिंग में प्रशिक्षित तीन मेडिकल सहायक भी नियुक्त किये जा रहे हैं। टाटा मेन हॉस्पिटल से B.C. Roy टेक्नोलॉजी हॉस्पिटल के डॉक्टरों और कर्मचारियों के प्रशिक्षण की भी बात चल रही है।

प्रवेश प्रक्रिया में परिवर्तन

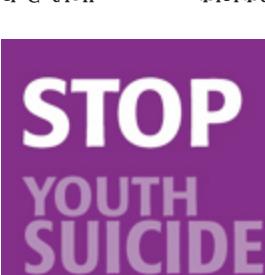
अपने 58 वर्ष के इतिहास में जोई ने पहली बार बची हुई सीटों को दूसरी counsellelling के तहत भरा है। मानव संसाधन मंत्रालय ने ये निर्णय हर वर्ष IIT में कुछ सीटें बच जाने की वजह से लिया है। इसके तहत पहले से प्रवेश पा चुके छात्र अपने विभाग को अपग्रेड कर सकेंगे, फिर बाकी बची सीटों के लिए नए छात्रों का चयन होगा।

फच्चों के लिए इस सत्र की शुरूआत में उनके मार्गदर्शन के लिए orientation प्रोग्राम रखा गया जो कि 17-22 जुलाई तक चला। 17 जुलाई को इसकी शुरूआत प्रो. एस. के. सोम ने की। उन्होंने IIT के शैक्षणिक माहीन की चर्चा की। 18 जुलाई को DOSA ने IIT के छात्र जीवन के बारे में फच्चों को बताया। फच्चों ने इसे काफी पसंद किया। शाम में VP शुभम माटा ने यहाँ की सामाजिक गतिविधियों, सोसाईटी तथा छात्रों के क्रियाकलापों से उन्हें अवगत करायी।

परिसर में दुर्घटनाओं का दौर

भारत के सर्वोत्तम अभियांत्रिकी संस्थान IIT में प्रत्येक वर्ष देश के कई मेधावी छात्र नामांकन पाते हैं। पिछले सत्र परिसर में हुई दुर्घटनाओं और आत्महत्याओं ने KGP के पाठ्यक्रम व चिकित्सा सुविधाओं पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। ये घटनाएँ देश के मेधावी छात्रों व IIT जैसे संस्थानों को कर्तव्य शोभा नहीं देती है।

घटित दुर्घटनाओं पर नजर झालें तो पहली मौत 22 मार्च के दिन रोहित कुमार की हुई जो LLR छात्रावास के निवासी व विद्युत अभियांत्रिकी विभाग के 2006 बैच के छात्र थे। उनकी मौत रिक्षा से निरने के बाद B.C. Roy अस्पताल में हुई। उन्हीं के बैच के एक और छात्र संदेश कुमार की मौत Internship के दौरान समुद्र में डूबने से हुई।



आगाज टीम : छात्रों की संख्या बढ़ रही है। इस लिहाज से B.C. Roy टेक्नोलॉजी हॉस्पिटल के विस्तार की कोई योजना? एक अन्य मल्टी स्पेशियलिटी अस्पताल की भी बात चल रही थी उस पर कितनी प्रगति हुई है?

प्रो. सिन्हा : दोनों अलग-अलग चीजें हैं। B.C. Roy टेक्नोलॉजी हॉस्पिटल का उद्देश्य कैपस में प्राथमिक चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना है जबकी मल्टी स्पेशियलिटी अस्पताल की परिकल्पना सेकेंडरी चिकित्सा सुविधा के लिये की गई है। इसकी स्थापना किसी निजी क्षेत्र के समूह के साथ मिल कर करने की योजना है। इसमें बाहर के लोग भी इलाज करा सकेंगे पर IIT की जनता को प्राथमिकता मिलेगी। इसमें कम से कम 100 बेड होंगे हालांकि ये संख्या 300 तक भी हो सकती है। उस स्थिति में भविष्य में मेडिकल कॉलेज की परिकल्पना की जा सकती है। सरकार की तरफ से भी ऐसे संकेत आये हैं कि IIT में भविष्य में मेडिकल कॉलेज खोले जा सकते हैं पर अभी ऐसी कोई योजना नहीं है। SMST प्राथमिक और द्वितीयक दोनों स्तरों पर दिसार्च में सहायता करेगा। SMST के डाक्टरों को भी विशेष कर इमरजेंसी में अपनी भूमिका निभाने को कहा गया है। SMST के डॉक्टर कई बार अपने काम से बचने की कोशिश करते हैं।

आगाज टीम : बीच में कलाईकुंडा एवं बेस के साथ मिल कर एवं एंबुलेंस की सुविधा उपलब्ध कराने की बात हुई थी?

प्रो. सिन्हा : ये संभव नहीं है। हेलिकॉप्टर को एवं एंबुलेंस नहीं समझा जाना चाहिए, दोनों अलग-अलग चीजें हैं। पूरे पूरी क्षेत्र में एक ही एवं एंबुलेंस है जो कि घायल फौजियों के लिए इस्तेमाल होती है।

आगाज टीम : छात्रों के लिए कोई संदेश?

प्रो. सिन्हा : हाँ, छात्रों को भी अपना उत्तरदायित्व समझना चाहिए। पहली बात की आप मेडिकल कार्ड और पुरानी रिपोर्ट के साथ ही अस्पताल आयें। इनके न होने से डॉक्टरों को असुविधा होती है। दूसरे, कुछ लोग बीमार पड़ने पर तत्काल न जा कर समय विशेष का इंतजार करते हैं। इससे दिन के कुछ समय इमरजेंसी पर अतिरिक्त बोझ पड़ता है। इस प्रवृत्ति पर दोक लगायें। तीसरे रूपांतर सहायता की जायदा चाही अपनी भूमिका और मानसिक रूप से पूरी तरह ठीक हुए, कक्षाओं का बोझ न लें।

कराया। अगले दिन उन्हें फिल्म दिखाई गई। प्रोफ कंचन चौधरी द्वारा रूपांतर और आध्यात्म का छात्र जीवन में उपयोगिता पर 20 जुलाई को चर्चा की गई। हाल में घटित कुछ अप्रिय घटनाओं को देखते हुए मनोचिकित्सक को बुलाया गया था। मनोचिकित्सक डॉ. जे. मनुष्मदार ने मानसिक रूपांतर तथा जीवन पर विवेचना की। अदिरम मुखजी और गौरव सेंगर के द्वारा career के विकल्प के बारे में छात्रों को अवगत कराया गया तथा प्रो. डी. विश्वास ने entrepreneurship की महत्ता से छात्रों को अवगत कराया। अंत में कुछ alumni ने छात्रों से बाते की तथा उन्हें IIT के छात्र जीवन पर एक वीडियो दिखाया गया जो फच्चों द्वारा काफी पसंद किया गया। इतने लंबे दिनों तक चलने की वजह से छात्रों की रुची साथ ही साथ उपस्थिति धीरे-धीरे कम होती चली गई। उम्मीद है कि प्रशासन की ये कोशिशें फच्चों में नई चेतना लाएगी और उनकी आने वाली जिंदगी में काफी मददगार साबित होगी।

नजरअंदाज भी कर दिया हो परंतु पिछले चार महीनों में हुई 3 आत्महत्याओं ने सभी को अचान्ति कर दिया है। 23 अप्रैल को नेहरू छात्रावास में चतुर्थ वर्ष के मेडिकल इंजिनियरिंग के छात्र ने अकादमिक दबाव में आत्महत्या कर ली। जून

माह में MMM छात्रावास के छात्र मनोज कुमार ने फॉसी लगा ली। आत्महत्या का कारण अभी तक रूपांतर नहीं हो पाया है। तृतींत बाद 2009 बैच के विद्युत अभियांत्रिकी छात्र योगेन्द्र कुमार की आत्महत्या का मुददा सामने आया। उनके पिता के अनुसार घटना का कारण योगेन्द्र के IIT दिल्ली का न मिल पाना था। आत्महत्या की ऐसी घटनाएँ आशा से पाए हैं।

हमारे विचार से कोई परेशानी इतनी बड़ी नहीं होती जिसका हल न निकल पाए और बात आत्महत्या तक पहुँच जाए। हम आशा करते हैं कि IIT को भविष्य में ऐसे दौर से फिर नहीं गुजरना पड़ेगा।

हाल कैसा है जनाब का ?

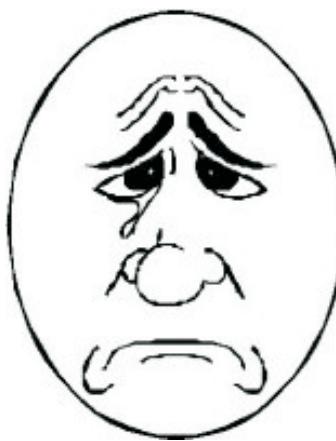
ये हँसी वादियाँ ये खुला आसमाँ
आ गए हम कहाँ? आ गए हम कहाँ?

रजिस्ट्रेशन की पूर्व संध्या पर अपने सारे साजो-सामान से सुसज्जित होकर बड़ी उम्मीदों के साथ हमने दुनिया के सबसे लम्बे प्लेटफार्म पर कदम रखा। आई.आई.टी. पहुँचने के लिए हमने टैक्सी ढूँढ़ा शुरू किया लेकिन यहाँ के टैक्सी वाले तो अपने आप को अफलातून के अब्बा और सुकरात के बब्बा से कम नहीं समझते, तुरन्त ही सुना दिया 150 रुपये का फरमान। खैर किसी तरह हम अपने छात्रावास पहुँचे। 2100 एकड़ में फैले कैम्पस का मुआयना करना आसान काम नहीं ऐसा सोचकर हम सुनहरे भविष्य के सपनों में खो गए।

सुबह - सुबह हम दौड़ते हुए मेसा की सीढ़ियाँ चढ़ ही रहे थे कि सामने खड़े एक शख्स को देखकर मेरे पैरों तले से मानो जमीन खिसक गई। सामने डोसे को देखकर मुँह में पानी तो आ ही रहा था पेट में चूहे भी कुद रहे थे। पर ये लंबी - लंबी मूँछों बाला घटोत्कच हम पर अंग प्रदर्शन का आरोप लगा रहा था। जब हमने अपने ऊपर निगाह दौड़ाई तो मानूम हुआ कि भूख की व्याकुलता में हम तो हाफ पैंट में ही आ गये थे। पतलून पहन कर सज्जन की तरह जब हम वापस आए तो बंद कपाट देखकर हमें बैरंग वापस लौटना पड़ा। पूछने पर पता चला साथ सीमा समाप्त हो चुकी है।

अब पेंट में कूदने वाले चूहों का स्थान बुलबुलों ने ले लिया था। इस समस्या के समाधान की एकमात्र जगह पर जाकर पाश्चात्य सभ्यता का अनुसरण करते हुए हमने गुनगुनाते हुए अपना कार्य प्रारम्भ किया। कार्य की समाप्ति पर हमें देश की सुविच्छ्यात जल - संकट की गंभीरता का पहली बार

इतनी गहराई से अहसास हुआ। अब हमारी भक्ति की परीक्षा थी। ऐसे विपत्ति के समय ही आरथा प्रबल होती है। रुग्नि को लगा की हमारी निद्रा का दूसरा चरण प्रारम्भ हो गया है पर हमारे भजनों ने उसका माथा ठनका दिया। खैर हम दोनों ही मजबूर थे। आखिरकार दो घण्टे की जहोजहद के पश्चात जब पानी की पहली बूँद के दर्शन हुए तो हमने चैन की साँस ली जो कि पहले ही दुर्गम्य के मारे बंद थी।



वो कहते हैं न कि दृष्टि का जला छाँ भी फूँक-फूँक के पीता है। अतः दोपहर में हम बाबूओं की तरह सज-धज कर मेसा पहुँचे लेकिन यहाँ तो लाईन इतनी लंबी थी जैसे बिहार के बाढ़ पीड़ितों को राशन बाँटा जा रहा हो। थोड़ी सी कशमकशा के बाद हमारी थाली को भी दो रोटियाँ नसीब हुई। ये रोटियाँ जर्मनी के दीवार से कम फौलादी नहीं थीं। परिणामस्वरूप इस चकव्यूह को भेदते हुए हमारे दो दाँत शाहीद हो गए।

शाम को हमारी इच्छा सैट-स्पार्ट की हुई तो हम दोस्तों के साथ निकल गए के.जी.पी. की सुन्दरता देखने। लेकिन नसीब को तो कृष्ण और ही मंजूर था। हॉस्टल की जीर्ण शीर्ण सङ्को पर हमारी साईकिल किसी हवाई जहाज की तरह उड़ी और हम धरती माँ की गोद से जा लिपटे। जब आँख खुली तो पता चला कि मेरी हड्डियाँ मेस के रोटियों की तरह फौलादी नहीं हैं। अब तो हम भी. सी.राय के बेड पर लेटे - लेटे यही गुन - गुना रहे हैं -

ये टूटी हड्डियाँ अब हमारी दास्ताँ
आ गए हम यहाँ आ गए हम यहाँ ।

Summer of '09

“कुछ बात है देश की मिट्टी में
जिसकी खुशबू ने विदेश में भी साथ ना छोड़ा।”

शायद जुलाई 15 की बात थी जब हमने अपने आपको खड़गपुर लौटने की तैयारी करते देखा तो याद आये एक सत्र पहले के पाल। बात है पिछले वर्ष की जब मैं और मेरे कई नित्री तीसरे साल के अंत में इंटर्न के लिए भाग - दौड़ कर रहे थे। हमर्से सो जो कुछ देश में रहने के इच्छुक थे वे देश में ही इंटर्न लगवा चुके थे तो जो विदेश जाने के इच्छुक थे उन्होंने विदेश में पूरे टेम्पो से मेल मारे। ISRO, TATA, ONGC, ISCNAL के साथ - साथ यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, जापान तक को नहीं छोड़ और देखते ही देखते सभी ने अपने SUMMER प्राजेक्ट का निश्चय कर लिया।

पर हमे सफलता मुफ्त में नहीं मिली। कुछ को महीनों के परिश्रम के बाद, तो कुछ को एक हफ्ते में ही न्योता मिल गया। कुछ को छात्रवृत्ति मिली तो किसी को TnP ने ही प्राजेक्ट दिलवा दिया। जिनकी अभी तक इंटर्न नहीं लगी क्या बताएँ कैसे जवाब आते थे उन्हे। दिवाली, ईद, क्रिसमस, होली तक की शुभकामनाएँ मिल गई पर कोई इंटर्न देने को राजी न था। कुछ ने तो Ph.D के लिए बुला लिया- “B.Tech तो हम पूरा कर लें और तब अगर जान बाकी रहे तो आपके ही द्वार आएँगे।”



प्रोफेसर को जिन्हे हमने मेल किये उनमें से कुछ ने तो युनिवर्सिटी छोड़ दी तो किसी ने दुनिया ही छोड़ दी और एक पर टिसर्च पेपर लीक करने के जुर्म में आजीवन काचावास की सजा भी थी। लग रहा था कि क्या चात इतनी काली होती है? तब अगले ही दिन सवेरे आई आशा की वह किरण जिसका हमें बेसब्री से इंतजार था। तुरन्त हम भागे बीजा और टिकट बनाने, फिर ट्रीट की परम्परा निभाई और एंड-सेम के पहाड़ को पार कर हम चले विदेश।

भारत में इंटर्न करने वालों ने चार धाम पूरे कर लिये तो अमेरिका जाने वालों ने रवाईनता रमारक और लास-वेगस जैसी जगहों के दर्शन किये बिना लौटना मुनासिब न समझा। यूरोप में शायद ही कोई देश होगा जहाँ तो भी पर SCHENGEN जाने वालों ने कदम ना रखा हो। कुछ तो मरम्म होते हैं जिन्होंने विदेश जाकर एक-दो पेपर प्रकाशित कर दिये और IIT का नाम रौशन कर दिया।

ठाई महीने बाद घर तो सभी आना चाहते थे पर कशमकशा इस बात की थी कि इन चांद लम्हों में बनाए मिश्रों को यूँ अलविदा कहना पसंद न आया। घर लौटने की खुशी तो थी पर विदेश छोड़ने का गम भी था। आखिर अब यह कहा जा सकता है कि जीवन सामान्य हो गया है पर गुजरे कुछ पल यादगार रहेंगे।

Enjoy the specific taste of Indian, South Indian, Chinese, Tandoor dishes
at the food café

Break n' Bite

a food den

For door step delivery:-

Call 9932486646

Tejvinder Singh Dhami (Rinku)
At – Hotel Park Arcade
Near – IIT Kharagpur

बात संपादक की

आखिरकार एक और वर्ष बीत गया। IIT खड़गपुर के लिए बीता हुआ अकादमिक सत्र काफी घटनाओं और उथल-पुथल से भरा रहा, जिसे शायद ही कोई याद रखना चाहेगा। सबसे पहले मंटी की मार लोगों की चिंता का कारण बनी और फिर कैफ्स में हुई दुर्घटनाओं ने छात्रों और प्रशासन दोनों को हिला कर रख दिया। बीच-बीच में 11 PM BAN और ILLU जैसे मुद्रे भी उठते रहे। सीनियर हॉस्टलों में लगातार चले निर्माण कार्य ने भी जनता को काफी परेशान किया। लेकिन सराहना करनी होगी कि कुछ मीरों को छोड़ कर सबने धैर्य से मुश्किलों का सामना किया।

IIT अभी परिवर्तन के दौर से गुजर रही है और ऐसे में कुछ मुश्किलें लाजमी हैं। छात्रों की संख्या काफी बढ़ गई है जिसके अनुपात में संसाधन तत्काल नहीं बढ़ सकते। नए कमरों के निर्माण के बावजूद मेस में भीड़ बढ़ेगी। यही हाल कक्षाओं का होगा। कई और चीजों लिहाजा लैब और लाईब्रेरी पर भी अंतिक्षित बोझ पड़ेगा। लेकिन इन सबके बीच यहाँ की मूल संरक्षित नष्ट नहीं होनी चाहिए जिसके लिए IIT प्रसिद्ध है। इसके लिए प्रशासन और छात्रों को मिल के काम करना होगा। सहज सहमति और सद्भाव को बनाए रखने की आवश्यकता होगी और ध्यान देना होगा कि छोटी-छोटी चीजें जो यहाँ के जीवन का हिस्सा हैं, नष्ट न हों। देखा गया है कि छात्रों में



बढ़ती IITs और बढ़ते ITians

पिछले सत्र 6 नई IITs की शुरूआत हुई और इस साल दो नई IIT में दाखिला शुरू हुआ है। 54% OBC आरक्षण हेतु सिर्फ खड़गपुर में ही 1140 छात्रों को दाखिला मिला जो कि पिछले वर्ष 900 प्रथम वर्षीय छात्रों से 240 ज्यादा है। जरूरत के हिसाब से नये कमरे, नये ब्लॉक, नये विंग बनाना प्रशासन द्वारा एक सराहनीय प्रयास कहा जा सकता है परं परेशानिया अब भी है।

1. क्लासरूम स्टेडियम जैसे लपा-लब भरे पड़े हुए हैं। विक्रमशिला, रमन, भट्टाचार्य, एसो-एन-बोस आदि अब छोटे लगने लगे हैं। जब एक कक्षा में 300 से अधिक छात्र पढ़ने लगेंगे तो एक प्रोफेसर कितने सवालों के जवाब दे पायेंगे।
2. मेस का खाना किसी को पसंद आये ना आये पर दोजाना लगती लंबी कतारों के सिलासिले देख भूख तो यूँ ही मिट जाती है। सिर्फ मेस ही नहीं बढ़ती जन संख्या को खड़गपुर कहाँ तक झेल पायेगा।
3. जो गैदान, कोर्ट, तरैया, मौजूदा स्थिति में है, वे सब खड़गपुर में कई वर्ष पहले से ही और तब की जन संख्या को देख कर बनाया गया था। भारतीय रक्कूलों में ऐसी सुविधाएँ अक्सर कम ही पाई जाती हैं और इन सब चीजों में रुचि छात्र पूर्वरूपातक में ही ज्यादा लेते हैं। यहाँ की सोसाइटीस्, इवेंट्स, फैर्ट, हॉल Activities आदि गतिविधियों का हम को जो शिक्षा मिलती है आप नई IITs में नहीं दे पायेंगे। मुझ तो यह है कि नई IITs के पास ढंग का कैफ्स भी नहीं है। गौर करने की बात यह भी है कि छात्रों ने IIT-BHU और ISM धनबाद की

18 जून 2009 को शाम चार बजे नेताजी अंडीटोरियम में प्रोफेसर वर्ग की बैठक हुई जहाँ हमारे डाइरेक्टर प्रो. डी. आचार्य ने सभी प्रोफेसरों का स्वागत किया। उन्होंने हाँ में हुए विकास कार्यों एवं संस्थान के सुधार की दिशा में उठाए जाने वाले कदमों के विषय में जानकारी दी। संस्थान की उपलब्धियों का श्रेय अध्यापकों, विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों को दिया किंतु साथ ही साथ तमाम खामियों का व्योरा भी दिया। प्लेसमेंट की हालत सुधारने के लिए पाठ्यक्रम और अध्यापन किया के अंतरावलोकन का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि प्रयास संदैव संस्थान को बेहतर बनाने हेतु किया जाए। गलत कारणों से संस्थान को मीडिया में चर्चा का विषय ना बनने दिया जाए। इसके लिए सबके सहयोग की आवश्यकता जताई।

हमारे alumni श्री प्रफुल्ल कुलकर्णी की अगुवाई में GKK पुणे द्वारा एक मास्टर प्लान तैयार किया गया है जिसे बोर्ड ने भी सहमति प्रदान कर दी है। इसके अंतर्गत संस्थान को एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर का संस्थान बनाने की योजना है। अगले दशक तक संभवतः संस्थान में पढ़ने वाले छात्रों की संख्या 20000 और अध्यापकों की संख्या 2500 होगी। 40% छात्र अंडरग्रेजुएट, 30% पोस्ट ग्रेजुएट और 30% डॉक्टोरल स्तर का अध्ययन करेंगे।

फैकल्टी मीट

आंवाज़

छोटी-छोटी मगर मोटी बातें



हाल के दिनों में कुंठा बढ़ी है जो कि पूर्णतया अनावश्यक और अकारण है। यहाँ के मरत और क्रियेटिव जीवन में कुंठा की कोई जगह नहीं है। प्रशासन ने इस संदर्भ में कुछ अच्छे कदम उठाये हैं। ओर्जिनेशन प्रोग्राम की निश्चित तौर पर आवश्यकता थी। बालांकि इसमें सीनीयर छात्रों की ज्यादा भागीदारी होनी चाहिए थी और अवधि भी कुछ कम होनी चाहिए थी। इसी तरह कैफ्स में साइकोलॉजिस्ट की नियुक्ति भी सराहनीय कदम है। लेकिन फिर भी आंतरिक मैटरिंग प्रणाली को और सुदूर बनाने की जरूरत है।

वैसे सत्र की शुरूआत में कुछ अच्छी खबरें भी आई हैं। आउटलुक और इंडिया टुडे ने IIT खड़गपुर को क्रमशः देश में पहला और दूसरा स्थान दिया है। कैफ्स प्लेसमेंट हालांकि अपने पुराने स्तर पर नहीं पहुँचा फिर भी संसार की स्थिति को देखते हुए संतोषजनक कहा जा सकता है। केंद्र में एक स्थाई सरकार के आने से आर्थिक स्थिति सुधारने के भी आसार बढ़े हैं। शैयर मार्केट में भी सुधार के आसार हैं। आशा की जानी चाहिए की अगले साल तक स्थिति सामान्य हो जाएगी।

और अंत में कैफ्स की नई जनता को आवाज़ टीम की तरफ से बधाईयाँ। आशा है IIT आपको रास आयेगी और आप अपने जीवन का सबसे अच्छा समय यहाँ गुजारेंगे और लंबे फासले तय करेंगे।

आवाज़ टीम

मुख्य संपादक: विकास कुमार, सुरेंद्र केरारी

संपादक: अविमुक्तेश भारद्वाज, वरुण प्रकाश

सह संपादक: आशुतोष कुमार मिश्रा, आदित्य मणि झा, मनोज कुमार, सोनल श्रीवाल्लव, दामिनी गुप्ता, अंकिता मंगल, अमन कुमार

ट्रिपोर्टर्स: मधुसूदन शर्मा, रवाति दास, निष्ठा शर्मा, निधि हरयानी, प्रतिक भारत्कर, अनुराग कटियार

वेब: सिद्धार्थ दोषी, सुरेंद्र कुमार

अपेक्षा नये IITs का चयन किया और शायद जब तक उन्हें IIT का नाम ना दे तब तक शायद 100 वर्ष पुरानी ISM और 40 वर्ष पुरानी IIT-BHU को छात्र IIT के बाद ही चयन करेंगे। अब आप ही कहिये कि बांड IIT के लिए यह दीवानगी किस हद तक सही है।

4. इस पूरी अफारा-तफरी के पीछे सबसे एहम मुद्दा था आरक्षण। यह तो सब ही मानते होंगे कि कुछ OBC और SC/ST छात्र सामन्य छात्रों कि ही तरह आर्थिक रूप से कुशल और महंगी शिक्षा खरीद सकते हैं। और अब तो कोंचिंग भी इतनी महंगी हो गई है कि उसे आरक्षित विद्यार्थी अपने पिताजी के बेहतर बैंक बैलेन्स की बदौलत ही ले पायेंगे। तब आरक्षण से सबसे ज्यादा फायदा तो अमीर आरक्षित छात्रों का होगा ना कि उनका जो सामन्य वर्ग से कम आय प्राप्त करते हैं।

5. ऊपर लिखी समस्याएँ शायद समय के साथ सुलझाली जाये पर JEE के गिरते स्तर को देखने से आने वाले छात्रों की गुणवत्ता पर एक प्रश्नचिन्ह हा लग जाता है। अगर प्रश्नों की कठिनाईयों को कम कर देंगे तो छात्रों की सही ढंग से तैयारी नहीं हो पायेंगी और जाहिर है कि वे वर्तमान काल के IITians के समानान्तर खड़े नहीं हो पायेंगे।

छात्रों की सुविधा के लिए भी कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं जैसे वर्तमान हॉस्टलों में नई मंजिलें, उनका नवीनिकरण एवं 2 नए हॉस्टलों का निर्माण, मेस के खाने की गुणवत्ता में सुधार, प्रशासन और छात्रों के सम्बन्धों में मजबूती। छात्रों की सहायता के लिए सलाह केंद्र, कैरियर मार्गदर्शन केंद्र और पर्सनलिटी डेवलपमेंट केंद्र भी बनाने की योजना है। सलाह केंद्र पर छात्रों की मनोवैज्ञानिक स्थिति का ध्यान रखने का जिम्मा होगा। प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए रद्दूर्ड मैटर और फैकल्टी मैटर दोनों उपलब्ध होंगे।

चिकित्सा की बेहतर सुविधाएँ मुहूर्या कराने की भी घोषणा की। B.C. Roy आल्पताल में एक 24X7 फार्मसी खोलने का प्रस्ताव है। 4 मेडिकल ऑफिसर 8 मेडिकल टैक्निशियन और 5 नर्सिंग रस्टर नियुक्त किए गए हैं। अब दो की बजाए चार एम्बुलेंस 24 घंटे उपलब्ध होंगे।

फैकल्टी सुधार और नियुक्ति के संदर्भ में भी आवश्यक कदम उठाने की बात की।

अंत में प्रो. आचार्य ने सूचित किया कि उन्होंने नए HRD मंत्री श्री कपिल सिंहल से मुलाकात की है। श्री सिंहल ने IIT Kharagpur को अन्य IITs के लिए आदर्श के रूप में देखने की इच्छा जारी किया। उन्होंने MHRD की तरफ से हरसंभव सहयोग का आश्वासन दिया।

DepC फँडा

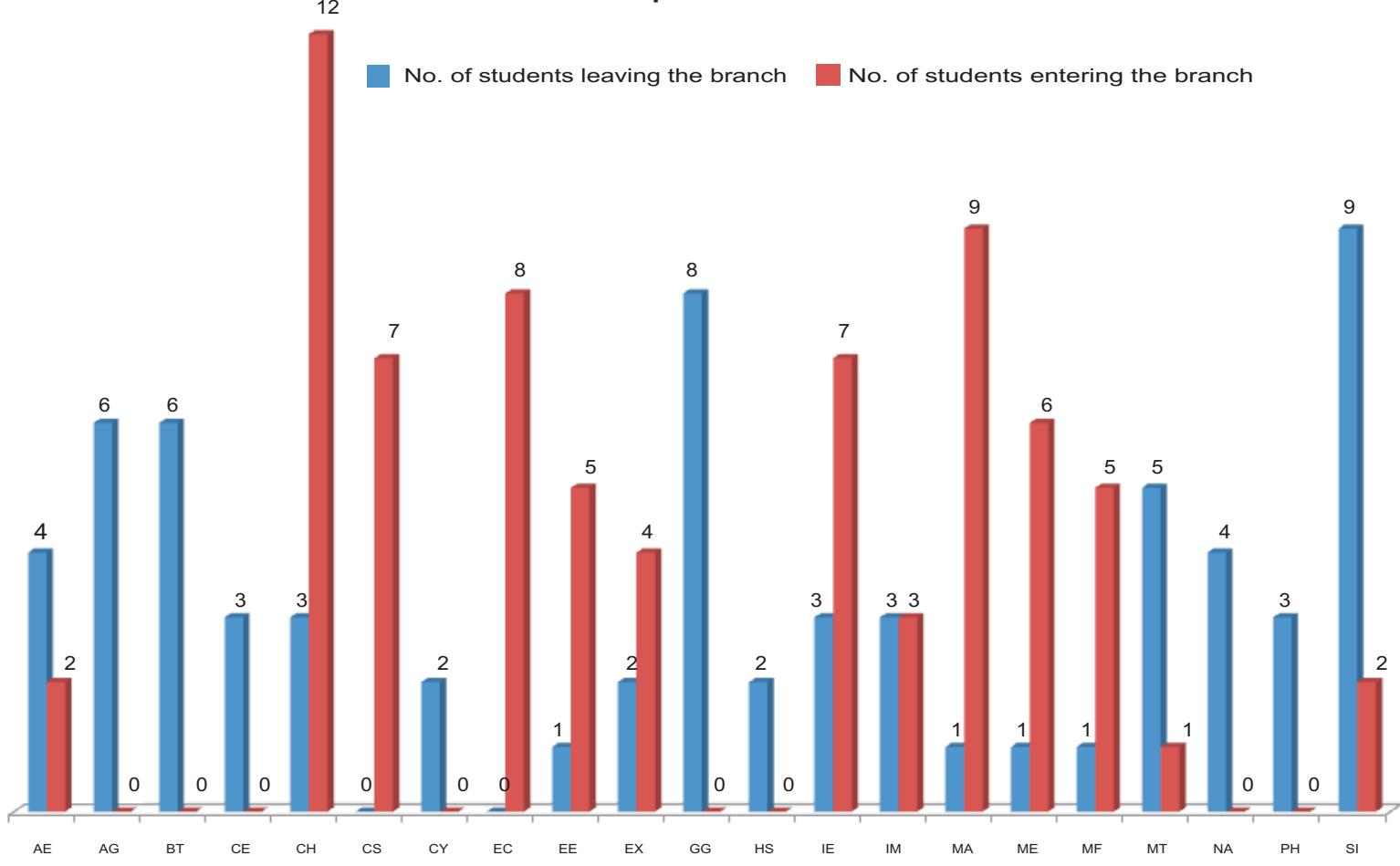
सबसे पहले तो खुशखबरी कि आपने जेईई में आने के लिए जितने पापड़ बैठे हैं उतने पापड़ बैठने करने की जरूरत नहीं। परन्तु पढ़ाई की ओर जो आस्था जेईई में आने के बाद आ जाती उससे ऊपर उठने में ही भलाई है। आप बाकी सारे आध्यात्मिक गतिविधि में मचा लें लेकिन अच्छी C.G पतेसमेंट एवं आगे अच्छे कॉलेज में प्रवेश के लिए बहुत जरूरी है। 8.5 के ऊपर की C.G अच्छी मानी जाती है और कौशिश करें कि 7.5 से ऊपर हो। अगर Dep C के सपने हैं तो C.G 8.5 से ऊपर होनी ही चाहिए। आपकी सहायता के लिए पिछले वर्ष के DepC के आंकड़े निचे दर्शाए गए हैं।

क्या करें वो तो आप जान ही गये हैं परंतु कैसे करे उसके फँडे कुछ इस प्रकार हैं :

1. क्लास में जरूर उपस्थित रहे। भले ही उस समय कुछ समझ में ना आये फिर भी ना सोये और सुनने का प्रयास करे। बाद में आपका पुरा पाठ्यक्रम पता होगा जो कि बहुत लाभदायक होता है। परीक्षा के समय ग्रेड में अटेंडेंस के भी अंक होते हैं।

2. प्रयोगशालाओं को गम्भीरतापूर्वक लैं एवं अच्छी लैब कापी बनाने की आदत डालें जो कि भविष्य में लाभदायक होता है। ट्युटोरियल क्लास एवं सम्बंधित प्रश्नों को अवश्य हल करें।
3. अगर पुस्तकालय में किताब ना मिले तो LAN पर से किताब की सहायता ले सकते हैं। उसके अलावा क्लास नोट्स और जिरोक्स का अध्ययन तो अत्यंत जरूरी है।
4. अच्छी C.G के लिए नियमित अध्ययन की आदत बनाये रखें।
5. जो विद्यार्थी DepC का मन बना कर यहाँ आए हैं उन्हें यह जानकार खुशी होगी की अन्य IITs के मुकाबले IIT KGP में DepC मारना काफी आसान है। हालाँकि DEPC के लिए न्यूनतम CG 8.5 होना चाहिए।
6. किसी को अपने कमरे में मगरने में तकलीफ हो तो सेन्ट्रल लाइब्रेरी के अलावा आप F-127 में बैठ कर भी पढ़ सकते हैं। यह रुम रात भर खुला रहता है। CSE Dept. का रुम C-120 भी इसी प्रकार रात भर खुला रहता है।

DepC Chart



Campus में खाने पान



1. Cheddies IIT KGP के campus के बाहर एक छोटा सा भाग है। पिछले वर्ष से पहले तक यह 24 घंटे खुला रहता था और 1970 के युद्ध के अलावा यह कभी बन्द नहीं हुआ था। परन्तु जब से campus में 11 pm बैन लगा है यह रात में बन्द हो जाता है।
2. B C Roy अस्पताल के सामने एक छोटी चाय की दुकान है जो campus में Bhasky के नाम से जानी जाती है। पटेल, आज़ाद और नेहरू के छात्रों में यह बहुत लोकप्रिय है।
3. नेहरू हॉल में जो canteen है वह Aseems के नाम से जाना जाता है।
4. Veggies campus का एक मात्र शाकाहारी restaurant है। हालांकि मज़े की बात यह है की रात में Veggies बन्द होने के बाद उसी स्थान पर eggsies खुल जाता है जो निशाचर बच्चों का एक परांतीदा स्थान है।
5. Super duper restaurant जिमखाना के पीछे बना हुआ है। चिर्पी तालाब के किनारे बैठ कर खाने का अलग ही आनंद है।
6. Tikka और chillies एक दूजे से लगे हुए हैं और TSC के बाहर बने हुए हैं।
7. इन सबके अलावा campus में nescafe का जाल आप देख ही चुके होंगे। प्रत्येक हॉल में आपको nescafe तो मिल ही जाएगा। Insti के अंदर भी 4 nescafe हैं, जो कि आपको CSE, Meta, Library तथा VGSOM के पास मिल जाएंगे।

Insti फँडा

1. 2100 एकड़ में फैला हमारा campus भारत के सभी कॉलेज में सबसे बड़ा है। हमारी लाइब्रेरी एशिया में सबसे बड़ी है।
2. ECE Dept. की लेब्स भारत में सबसे श्रेष्ठ मानी जाती है।
3. Agri insti का सबसे बड़ा Department है।
4. सभी IITs के मुकाबले हमारा LAN अधिक तेज है और इस पर 60 TB से अधिक material है जो 24 घंटे उपलब्ध रहता है।
5. हमारी main building E के आकार में है।
6. Main building बनने से पहले नेहरू museum में कक्षाएँ दी जाती थीं। नेहरू museum के पास कुछ तहखाने भी बने हुए हैं जो अंग्रेजों के जमाने के हैं। इन तहखानों में हमारे देश के कई बड़े कांतिकारियों को रखा जा चुका है। कुछ कांतिकारियों को उसी स्थान पर फाँसी भी दी जा चुकी है।
7. नेहरू museum के सामने जो विमान रखा हुआ है वह पहले एक दम दुरुस्त था तथा कई लाइर्सों में काम में लिया जा चुका है।



8. 2.2 के बारे में अब तक तो आप जान ही गए होंगे। यह scholars avenue, नतीनी चंजन मार्ग तथा शाहीद संतोष तारकेश्वर मार्ग को मिलाकर बना हुआ है तथा सभी छात्रावासों को आपस में जोड़ता है।

जिमखाना फँडा

इन्होंने अब तक आप जान ही चुके होंगे कि TSG (टेक्नोलॉजी स्टूडेंट जिमखाना) एक जिम से बढ़कर काफी कुछ है। यहाँ शब्दों में बोले तो खड़गपुर में होने वाली छात्रों द्वारा संचालित सारे गतिविधियों का केंद्र जिमखाना ही है। यहाँ पर भले ही कैम्पस के बाहर कुछ ना हो पर आपके मनोरंजन और सम्पूर्ण विकास का पूरा अवसर दिलाना ही जिमखाना का उद्देश्य है। ओपन ॥५ फ्रेशर आदि जितनी भी प्रतियोगिताएँ होती हैं उन सारे फेस्ट जैसे कि क्षितिज लिंग फेस्ट उन शौर्य जिमखाना द्वारा ही संचालित होते हैं।



जिमखाना प्रेसिडेंट सर्वोच्च पद है। उनके बाद V.P. (वाइस प्रेजिडेंट) का हमारे 6 जनरल सेकेटरी। कल्चरल और स्पोर्ट्स के है। जनरल सेकेटरी के बाद सेकेटरी है जो कि अपने क्षेत्र से संबंधित कार्य देखते हैं।

हर साल क्षितिज उन लिंग फेस्ट के लिए दो टीमों का गठन होता है जिसे कोर्टीम कहते हैं। यह पूरे वर्ष काम करके फेस्ट का आयोजन करते हैं। आपके रुचि के अनुसार बहुत सारी सोसाइटीज हैं।

फेस्ट फँडा

1. IIIu – IIIu IIT Kgp में मनाया जाने वाला एक अनुपम द्व्याहार है। यह हर वर्ष दिवाली पर मनाया जाता है। प्रत्येक हॉल के छात्रों द्वारा बड़ी - बड़ी चार्टाईयाँ बनाई जाती हैं तथा उनपर दिये लगाकर मनोरम आकृतियाँ बनाई जाती हैं।



2. क्षितिज – यह IIT Kgp का Tech Fest है। हर वर्ष फरवरी में मनाया जाने वाला यह Fest एशिया के सबसे बड़े Techno Management Fest के रूप में उभर कर आया है।



3. Spring Fest – यह IIT Kgp के विद्यार्थियों का पसंदीदा Fest है। यह हर वर्ष जनवरी के अन्त में मनाया जाता है और इसमें तरह - तरह के सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।



4. शौर्य – विद्यार्थियों में खेल भावना को बढ़ाने के लिए यह Fest आयोजित किया जाता है। यह Fest पिछले वर्ष पहली बार आयोजित किया गया था।



इन चार मुख्य Fests के अलावा कई डिपार्टमेंट Fests भी होते हैं। OENA का समुद्रमन्थन, कैमिकल का Cheminsight, Meta का Composite, माइनिंग का Great Step और Indu का Optima। इन सभी Fests में दूसरी संस्थाओं से कई विद्यार्थी आते हैं।

इनसे क्या कहें?



चुनावों के परिणामों के बाद हुई कुर्सी की फेर बदल काफी दिलचस्प रही। ऐसे मंत्रालय में जो पूर्व मंत्री थे उनके तो कई किसी सुने थे और जो अभी कुर्सी पर बिठाया है वे भी कोई छोटी हस्ती नहीं हैं। लालू जी को तो आप जानते ही हैं: हार्ड रक्कूल आँफ बिसेन्स ने इन्हे “मैनेजमन्ट गुरु” से नवाज़ा। यह वही लालू जी है जिन्होंने समझा कि बच्चों की भलाई इसी में है के वे उनकी जीवनी के बारे में आठवीं कक्षा में ही जान ले।

उनकी जीवनी के बारे में आठवीं कक्षा में ही जान ले। पर NDA सरकार ने यह उचित ना समझा और शिक्षा को राजनीतिक प्रदूषण रहित बनाने के लिए लालू जी के खण्ड को निकाल दिया। और तो लालू जी से मीलो आगे निकली मायावती जी जिन्होंने अपने मरने से पहले ही अपने ही मूर्तीयों का उद्घाटन कर दिया; शायद उन्हें उस था कि उनको मानने वाले उनकी इस इच्छा को पूरा नहीं करेंगे। यह बात हुई लालू जी और मायावती जी की। अब ममता बनर्जी का क्या कहना? सिंगूर में नैनों बनने ही वाली थी कि आपने सारे प्लांट संग्रह टाटा को बंगल से बाहर कर दिया। ममता बनर्जी ने अपना प्रपोज़िल प्रस्तुत किया तो लालू जी को उसमें अपने प्रपोज़िल से हटकर कोई भैंस नज़र ही नहीं आया। इस पर ममता जी को लालू जी के बताये 90,000 करोड़ के मुनाफे में से करीब 9 हजार करोड़ ही खर्च करने लायक मिले क्योंकि बाकी तो आयकर भवन व टैक्स को ही चला गया। अब इनसे क्या कहें?



VICE PRESIDENT

शुभम माटा

GENERAL SECRETARY

G. SEC (Sports and Games)

अंकित जोशी, अंगम पराशार

G. SEC (Social and cultural)

मन्दार चंद्रोरकर, कविश देसाई

G. SEC (Technology)

प्रणव पटवर्धन, दीपक सिंह

SECRETARY

TENNIS

चौहीत कुमार

FOOTBALL

सौरभ चन्द्र

INDOOR GAMES

अमीत सुवीर

VOLLEYBALL

अशोक कुमार

GYMNASTICS

रवि गौतम

BADMINTON

आलोक जोशी

HOCKEY

संजय कुमार किरकु

CRICKET

इरफान खान

AQUATICS

गौरव जैन

ENTERTAINMENT

धर्मन्द कुमार धीर

DRAMATICS

कीर्ति पाण्डे

JOURNAL

जी पवन

LITERARY

सौरभ मीणा

PHOTOGRAPHY

नवीन कुमार

FILMS

वैभव सिंहल

FINE, ALLIED ARTS & MODELING

शालीन भट्ट

WEB

अनील पुलाकांती

ATHLETICS

रशमी वाघमार

Kgp Lingo's

पंजी

जिसका CG 5 और 6 के बीच हो।

नहली

जिसका CG 9 और 10 के बीच हो।

बटी

इलेक्ट्रीकल विभाग

घासी

एग्रीकल्चर विभाग

भाट

बैकार में बार्टे करना

फच्चा/फच्ची

प्रथम वर्षीय छात्र/छात्राएँ

हप्पा

हॉल प्रगुरु

हथौड़ा

मैकैनिकल विभाग

हुहा

कुछ काफी अच्छा

मरखाना

किसी काम को खराब कर देना

DC top 5

1. Religulous <documentary>

2. Rivaldo Collection <standup comedy and plays>

3. Umberto D <movie>

4. Batman: Gotham Knight <Anime>

5. [Rec] <movie>

एक पहलू ऐसा भी



आज के इस मन्दी के दौर में जब हर जगह मंटी छाई हुई है तो ऐसे में प्रकाशन उद्योग के अच्छी स्थिति की आशा करना बेमानी ही है, बल्कि यह तो सबसे ज्यादा प्रभावित उद्योगों में है। ऐसे में अगर आपको यह पता चले कि प्रसिद्ध भारतीय लेखक विक्रम सेठ को उनके अगले उपन्यास हेतु 14 करोड़ रुपये इडवांस के रूप में मिले हैं तो आपका आश्चर्यचकित होना स्वाभाविक ही है। विक्रम को उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'ए सुटेबल ब्लॉय' के सीक्रेटेल के लिए यह एडवांस पैगेनिंग ने दिया है। यह घटना भारतीय लेखक अपने पुस्तकों से हुई आमदनी हेतु प्रकाशकों पर आश्रित होते थे, वहीं अब नयी पीढ़ी के भारतीय लेखक अपने आर्थिक अपिकारों के प्रति जागरूक हैं तथा अपने अधिकारों के लिए प्रोफेशनल तरीके भी अपना रहे हैं। यही कारण है कि कई लेखक अब खतंत्र लेखन को अपना रहे हैं तथा आजीविका हेतु अन्य स्रातों पर अपनी निर्भरता कम कर रहे हैं।

परिवार....एक नेक शुरूआत

खुद के लिए जिया तो फिर तुमने जीवन क्या जिया,
तो जिंदगी बेकार है जिसने एक चैहरे को भी मुरक्काहट ना दिया।

किसी कवि ने इन शब्दों में जीवन की सार्थकता को परिभाषित करने की कोशिश की है। लेकिन कुछ लोग होते हैं जिनके लिए जीवन की सार्थकता केवल अपनी सफलता में ही नहीं होती, बल्कि वो कुछ ऐसा कर जाते हैं जिसकी कल्पना किसी ने की भी नहीं होती और जो दूसरों के लिए एक मिसाल बन जाती है।

अगर आपको पता चलता है कि किसी के पास IIM से ग्रेजुएशन तथा IIM से MBA की डिग्री है तो आपके दिमाग में तुरंत एक कार्पोरेट गैनेजर की छवि उभरती है। लेकिन कहा जाता है ना.....इतिहास वो रचते हैं जो कुछ अलग करने का ज्ञान रखते हैं। ऐसा ही कुछ किया है हमारे एल्युमनिस विनायक लोहानी ने जिन्होंने अपना पूरा जीवन उन बच्चों के उत्थान हेतु समर्पित कर दिया जिनके बारे में सोचने तक का वक्त किसी के पास नहीं है।

आईआईएम कोलकाता से 2003 में पासआउट होने के बाद विनायक ने श्री रामकृष्ण और द्वामी विवेकानंद से प्रेरित होकर 'परिवार' नामक संस्था की स्थापना की। 'परिवार' असहाय बच्चों जैसे अनाथ, परिव्यक्त, गरीब आदिवासी एवं ऐड लाइट क्षेत्र के बच्चों की शिक्षा एवं संपूर्ण विकास में मदद करने वाली आवासीय संस्था है जो कोलकाता शहर से 30 कि.मी. दूर बाखराहट में लगभग 8 एकड़ जमीन में फैली हुई है। वर्तमान समय में 372 बच्चों ने 'परिवार' के रूप में नया जीवन पाया है।

परिवार द्वारा बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु हर प्रबंध किया जाता है। प्रवेश के बाद बच्चे की उच्च शिक्षा एवं भविष्य सुरक्षित होने तक उसकी पूरी देखभाल की जिम्मेदारी संस्था की होती है। संस्था अपने नाम 'परिवार' को सार्थक करते हुए एक परिवार की तरह ही जिस भी क्षेत्र में बच्चा शिक्षा प्राप्त करना चाहे उसमें उसका पूरा समर्थन करती है। परिवार आश्रम में ही संस्था का अपना विद्यालय 'अमर भारत विद्यापीठ' स्थित है जहाँ ये बच्चे शिक्षा प्राप्त करते हैं। इसके अलावा संस्था द्वारा जनजातियों के उत्थान हेतु भी कई कार्यक्रम चलाए जाते हैं। परिवार द्वारा 24 परगना के ग्रामीण क्षेत्रों में कई कार्य क्रम किए जा रहे हैं। इसके अलावा कई आदिवासी क्षेत्रों जैसे मिदनापुर, बाँकुरा, पुलिया, सिंहभूम (झारखंड) में लगभग 400 आदिवासी परिवारों को 9 टन भोजन का सामान हर महीने पहुँचाया जाता है। संस्था के लाए कार्य संस्था के कर्मठ

सेवाव्रती करते हैं जो परिवार आश्रम में ही रहते हैं।

संस्था अपने विकास पर भी समर्पित ध्यान दे रही है जिससे ज्यादा से ज्यादा बच्चों को आश्रम में लिया जा सके तथा गुणवत्ता में किसी प्रकार की कमी ना हो। संस्था 500 छात्राओं के लिए एक आवासीय परिसर तथा कई आदिवासी क्षेत्रों में आश्रम बनाने की परियोजन पर भी काम कर रही है। अंतिम वित्त वर्ष में परिवार ने लगभग 1 करोड़ रुपये परिवार आश्रम पर एवं 1.5 करोड़ रुपये छात्राओं के लिए आवासीय संस्था बनाने पर खर्च किए। पूरे विश्व भर में 'परिवार' को समर्थकों से 3करोड़ से ज्यादा रुपये हुए। 400 से ज्यादा आईआईएम एल्युमनाई परिवार के नियमित डोनर हैं।

परिवार की शुरूआत विनायक ने 2003 में IIM से पास होने के तुरंत बाद किराए के मकान में मात्र तीन बच्चों से शुरूआत की थी। शुरूआत में किसी प्रकार की आर्थिक मदद के अभाव में वो पार्ट टाइम में मैनेजर्मेंट परीक्षाओं की तैयारी कर रहे

छात्रों को पढ़ाते थे। धीरे धीरे और लोग भी मदद के लिए आगे आने लगे। 2004 में परिवार ने खर्च की जमीन खरीदी और तब परिवार आश्रम का निर्माण हुआ। अन्य संगठन जैसे Sankalp और Child in Need Institute (CINI) परिवार को परिव्यक्त बच्चों को ढूँढ़ने में सहायता करती है। विनायक से जब पूछा गया कि लाभप्रद अविष्य को छोड़कर उन्होंने परिवार को क्यों छुना तो उनका कहना था कि "हम जो करते हैं, क्या हम पूरी तरह जानते हैं कि वैसा क्यों कर रहे हैं? सामाजिक मानक ही हमारा रास्ता तय करते हैं। मैं भी पहले वही कर रहा था, पहले इंजीनियरिंग, फिर एक साल इन्फोर्मेशन में काम और

फिर मैनेजर्मेंट। पर मुझे लगता था कि आईआईएम के वातावरण में मैं मिसाफिट हूँ। मुझे लगता था कि मेरे जीवन में कहीं कुछ कमी है। मेरे जित्रों और संबंधियों ने मुझे बहुत हतोत्साहित करने की कोशिश की, लेकिन धीरे धीरे लोगों को एहसास हुआ कि मैं जो कर रहा था, मैं उसके प्रति गंभीर था।"

हम सब अपने कमर्मों में बैठकर देश की गरीबी, निरक्षरता पर आराम से बात करते हैं पर शायद ही कोई इन सब समस्याओं को दूर करने के लिए ग्राउंडलेवल पर काम करने को तैयार होगा। आज इक्कीसवीं सदी में देश को सही मायने में विकसित होने के लिए विनायक जैसे लोगों की जरूरत है। विनायक हमेशा कहते हैं कि मैंने अपने लक्ष्यों को पालिया है किंतु इसका मतलब यह नहीं है कि मेरा काम खत्म हो गया है। अभी भी मुझे बहुत कुछ करना है, अभी तो मुझे एक लम्बा रास्ता तय करना है।



पहले और दुसरे वर्ष के छात्र-छात्राओं को चयन के लिए आमंत्रण

यदि आप आवाज का हिस्सा बनना चाहते हैं एवं कैम्पस से जुड़ी घटनाओं की जानकारी और उनपर अपनी निष्पक्ष राय व्यक्त करने की क्षमता रखते हैं तो चयन प्रक्रिया के लिए आपका खागत है।

चयन स्थल: विक्रमशिला फोयर

दिनांक: 14 अगस्त 2009

समय: 5:30 PM

Technology कार्टून कोना

Welcome to first year students
ORIENTATION PROGRAMME
NETAJI AUDITORIUM

फच्चा पूरे टेम्पो से

हेत्थ पर लेक्चर |||

प्रोफेसर्स : इंग्लिश से
दूर रहो क्यों कि ये
चेतनाशून्य करते हैं।

वाह दात !!!! अपने तो पूरा
पैनिकल कर ले करके साक्षा लिया
!! उस लेवल की भी चेतना शून्य

फच्चे नेता
जी से बाहर
आते हुए |

बेचारे फच्चे !!! हम तो
खैर बच गए और पी
से।

अब "Ready to eat" दही भी.. :-

डिल्वाबंद सजियों, दूध और "Ready to eat" खाद्य पदार्थों में अब दही भी शामिल हो गया है। Agricultural and Food Engineering डिपार्टमेंट की एक टीम द्वारा पाउडर दही का विकास किया गया है जो कि बिना Preservatives के सारे पोषक तत्वों को उग्र मौसम परिस्थितियों में भी 3 महीनों तक बरकरार रखता है। इसको इस्तेमाल करने के लिए सिर्फ पाउडर को पानी में मिलाने की जरूरत है तथा इसके भंडारण के लिए कोई खास पैकिंग की भी जरूरत नहीं है।

Al Gore Sustainable Technology Venture Competition™, India:- इस

प्रतियोगिता की कल्पना सिसरो की CEO ऊपाली उपराजिता ने की थी। अपने नाम के अनुकूल इस प्रतियोगिता का लक्ष्य भारत के अभियांत्रिकी, प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन के मेधावी छात्रों की विचारों को वहनीय विकास की ओर मोड़ना है। इस वर्ष यह प्रतियोगिता IIT खड़गपुर में 6-7 नवंबर, 2009 को आयोजित की जाएगी।

ओवरबिज का निर्माण आरंभ :-

IIT खड़गपुर के बहुप्रतीक्षित रेलवे ओवरबिज का निर्माण आखिरकार शुरू हो गया है। यह ओवरबिज IIT खड़गपुर के परिधि से होते हुए मलांचा तक जाएगा।

IIT एवं IIMs अब बनेंगे वैशिक :-

हाल ही में मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री डी पुरणदेश्वरी ने राज्य सभा में कहा कि सरकार IIT एवं IIMs को विदेशी देशों में परिसर खोलने की अनुमति देने के बारे में खुले विचार रखती है। उनके अनुसार इन संस्थानों को OBC कोटा लागू करने के लिए 54 प्रतिशत विद्यार्थी के कारण अभी शिक्षकों की कमी का सामना करना पड़ रहा है। इस समस्या के दूर होने के बाद इन संस्थानों को वैशिक विद्यार्थी की अनुमति दी जा सकती है।

मनोवैज्ञानिक की नियुक्ति :-

हाल ही में घटित आत्महत्या प्रयासों के मददेनजर IIT प्रशासन ने इस प्रकार के हादसों को रोकने के लिए एक आवासीय मनोवैज्ञानिक को नियुक्त किया है। उनको एक शिक्षक और छात्र प्रतिनिधियों द्वारा सहायता प्रदान की जाएगी। इन सबके द्वारा एक मंडली गठित की जाएगी जो कि प्राथमिक ट्रेनिंग के बाद मानसिक तौर पर प्रशिक्षण और दुखी छात्रों की पहचान कर उनकी सहायता करेगी।

IIT भुवनेश्वर में कक्षाएं शुरू :-

इस वर्ष 22 जुलाई से IIT भुवनेश्वर की कक्षाएं भुवनेश्वर में खड़गपुर Extension सेंटर बिल्डिंग में शुरू हो गई हैं। IIT भुवनेश्वर के स्थायी कैम्पस का निर्माण साल 2011 तक कंपनी, जटनी में 935 एकड़ की जमीन पर किए जाने की उम्मीद है। नये कैम्पस का निर्माण होने तक इसी Extension सेंटर में क्लासेज होंगी। IIT भुवनेश्वर के प्रबंधन ने अभी खड़गपुर Extension सेंटर में हास्टल की कमी के मददेनजर अस्थायी आवास की व्यवस्था की है।

नये उप निदेशक नियुक्त :-

IIT खड़गपुर के बोर्ड ऑफ गर्नर्नर्स के द्वारा चयनित selection cum search कमिटी ने हमारे ए उप निदेशक का चयन कर लिया है। बोर्ड ऑफ गर्नर्नर्स के अध्यक्ष ने प्रोफेसर ए के मज़बूत, डिपार्टमेंट ऑफ कम्प्यूटर साईंस एवं इंजीनीयरिंग, का उप निदेशक के रूप में अनुमोदन किया। उनका कार्यकाल तीन वर्ष की अवधि के लिए होगा।

खड़गपुर एन्ट्यूनिस की उपलब्धि :-

बैंगलौर की सोनाटा इंफोर्मेशन टेक्नोलॉजी लिमिटेड ने IIT खड़गपुर के पूर्व छात्र अनंत पदमनाभन को सर्विस बिजेनेस का हेड नियुक्त किया है। इसके पहले वे एजेंटेक्साफ्ट के डैप्युटी जनरल मैनेजर थे। उन्होंने IIT से पास आउट होने के बाद IIM बैंगलौर से मास्टर्स किया था।

PROVIDING EFFICIENT SALES, SERVICE SINCE 10 YEARS IN IIT,KGP.

GOYAL INFOTECH

PURI GATE, NEAR IIT MAIN GATE, KGP,

Ph. 03222-220158, 9932481451, 9333359460

Email : goyalinfotech@gmail.com

Thinking of Buying Laptop or Desktop Don't Forget to Enquire Rates from us
We Guarantee Lowest Price, with Various Offers & Gifts for Students,
With Most Efficient Service , Buy Laptop from Goyal Infotech &
We Promise Tension Free Career In IIT, Kgp

Complete Solution for
Laptop Repairing
By Experience
Hardware Engineers,
All Laptop Spares,
Batteries, Adaptor, LCD's
Available Here.



We give Service for Laptop & Desktop in Warranty.
Out of warranty, We Sell Extended Warranty
Care Packs of Laptops of All Brands,
all types of Valuable & Complete Solutions.

Think Twice before buying Laptop or Desktop
from any where, any one who comes to you,
From Kolkata, from Home Town,
Take a survey that all types of Laptop Service
Done Under One Roof Buy Reputed Brand
From Reputed Showroom.

EXTEND YOUR WARRANTY OF YOUR LAPTOP 2 YRS OR 1 YR OF HP, COMPAQ, DELL, ACER, SONY VAIO AND BE TENSION FREE ABOUT HUGE LAPTOP REPAIRING COST & LAPTOP SPARES COST.

**AUTHORISED
DEALER :**

